भगत नामदेव – सबद ४०

दूधु कटोरै गडवै पानी ॥

रागु भैरउ, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ११६३

दूधु कटोरै गडवै पानी ॥
कपल गाइ नामै दुहि आनी ॥१॥
दूधु पीउ गोबिंदे राइ ॥
दूधु पीउ मेरो मनु पतीआइ ॥
नाही त घर को बापु रिसाइ ॥१॥ रहाउ ॥
सुोइन कटोरी अंमृत भरी ॥
लै नामै हरि आगै धरी ॥२॥
एकु भगतु मेरे हिरदे बसै ॥
नामे देखि नराइनु हसै ॥३॥
दूधु पीआइ भगतु घरि गइआ ॥
नामे हरि का दरसनु भइआ ॥४॥३॥

सार: दिव्यता की खोज वास्तव में बहुत सरल है। यह परिवर्तनकारी यात्रा तब शुरू होती है जब हम अपने चंचल मन को विभाजन और ध्यान भटकाने वाली चीज़ों से हटाकर एकता की पवित्रता को अपनाते हैं, यह शक्ति वह है जो हमारी अंतरात्मा को पोषण देती है। दिव्यता भौतिक धन-दौलत से नहीं मिलती, यह तब प्रकट होती है जब हम स्पष्ट नीयत और विनम्रता के साथ जीवन जीते हैं। सादगी की इस भावना से आध्यात्मिक विकास होता है जिससे पवित्रता कोई दूर या मुश्किल से मिलने वाली वस्तु न रहकर, हमारे दैनिक जीवन का जीवंत हिस्सा बन जाती है।

दूधु कटोरै गडवै पानी ॥

एक कटोरा दूध और पानी का घड़ा। यह दिव्यता को पाने की भावना को दिखाता है, दूध ज्ञान का प्रतीक है जो आध्यात्मिक पोषण देता है जबकि पानी सच्चाई का प्रतीक है जो जागरूकता के लिए महत्त्वपूर्ण है।

कपल गाइ नामै दुहि आनी ॥१॥

कपिला गाय का दूध नामदेव द्वारा भेंट के तौर पर अर्पित किया गया। यह कर्म स्पष्ट अंतरात्मा को दिखाता है, कपिला गाय जिसे सबसे पवित्र माना जाता है, शुद्ध इरादे का प्रतीक है और दूध की भक्ति-भरी भेंट सत्यनिष्ठ भक्ति का प्रतीक है। (१)

दूधु पीउ गोबिंदे राइ ॥

हे सर्वव्यापी शक्ति, यह दूध पीजिए। यह विश्वास दर्शाता है कि दिव्यता केवल एक प्रतीक नहीं, बल्कि सभी जीवों में मौजूद जीवंत शक्ति है।

दूधु पीउ मेरो मनु पतीआइ ॥

दूध पीजिए, इससे मेरा मन संतुष्ट होगा और शांति मिलेगी। यह कर्म शांति और तृप्ति के लिए आंतरिक सामंजस्य की खोज को दर्शाता है।

नाही त घर को बापु रिसाइ ॥१॥ रहाउ ॥

नहीं तो घर पर मेरे पिता मुझसे नाराज़ हो जाएँगे। यह रूपक के तौर पर पिता को भीतर बसी अंतरात्मा के रूप में दिखाता है, ऐसी सत्ता जो अव्यवस्था के विरुद्ध मार्गदर्शन करती है। (१)(विराम)

सुोइन कटोरी अंमृत भरी ॥

अमृत से भरा, चमकता हुआ सुनहरा कटोरा। यह आंतरिक स्वरूप के ऐसे शानदार पात्र में बदलने का प्रतीक है जो स्पष्टता को धारण कर, उसकी झलक सब ओर बिखेरता है।

लै नामै हरि आगै धरी ॥२॥

नामदेव कहते हैं कि उन्होंने इसे स्वीकार किया और सर्वव्यापी उपस्थिति के समक्ष रख दिया। यह सत्य के साकार रूप और उसके सार को ईमानदारी से व्यक्त करने के संकल्प को दर्शाता है। (२)

एकु भगतु मेरे हिरदे बसै ॥

एकत्व के प्रति भक्ति मेरे हृदय में वास करती है। यह अस्तित्व की आनंदमयी अवस्था को दर्शाता है जिसमें एकता को अपनाया जाता है फिर वहां विभाजन या टकराव के लिए कोई स्थान नहीं रहता।

नामे देखि नराइनु हसै ॥३॥

नामदेव को देखकर सर्वव्यापी चेतना मुस्कुरा उठी। यह मुस्कान आत्म-साक्षात्कार का संकेत देती है कि वह दिव्य तत्व जिसकी खोज बाहर चल रही थी, वास्तव में चेतना के भीतर ही विद्यमान था। (३)

दूधु पीआइ भगतु घरि गइआ ॥

दूध पिलाने के बाद भक्त अपने घर चला गया। यह सच्चे स्वरूप की ओर वापसी को दर्शाता है जहाँ भ्रमों में भटकने के बाद मन को शांति और आंतरिक सुकून मिलता है।

नामे हरि का दरसनु भइआ ॥४॥३॥

नामदेव कहते हैं कि उन्होंने सर्वव्यापी दिव्यता का अनुभव किया है। यह रेखांकित करता है कि जब एकत्व के प्रति भक्ति सच्ची होती है तब सभी में दिव्यता की उपस्थिति दिखाई देने लगती है। (४)(३)

तत्त्व: भक्त नामदेव हमारे आंतरिक जीवन में कोमलता के महत्व पर ज़ोर देते हैं। वह कहते हैं कि वास्तव में हमारी भेंट की भव्यता नहीं बल्कि हमारी नीयत की पवित्रता मूल्य रखती है। प्रतीकात्मक रूप से, दूध पोषण के तौर पर एकाग्र ध्यान को दर्शाता है जबकि पानी आध्यात्मिक पोषण के लिए ज़रूरी नैतिकता का प्रतीक है। बर्तन उन विचारों के प्रतीक हैं जो जागरूकता को ग्रहण करते हैं और अमृत का सुनहरा कटोरा स्पष्टता और सच्चाई से भरे अंतर्मन को दर्शाता है। मुस्कान उस आनंद को दिखाती है जो तब मिलता है जब हमारी भक्ति सरल, अटूट और सच्ची होती है। इस सोच को

अपनाकर हम अपने संतुलित मन से फिर से जुड़ सकते हैं जिससे हमारी आध्यात्मिकता विकसित हो सके और स्थायी बनी रहे।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com